ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४०१ –

ॐ वीराय नमः

विक्रमशाली परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Valiant.

विक्रमशालित्वात् वीरः अर्थात् विक्रमशाली होने के कारण भगवान् वीर हैं। भगवान् सर्वाधिक वीर, बलशाली हैं। जगत में जो कोई भी वीर प्रतीत होता हैं, वह भगवान् के बल के लेश मात्र से ही वीर होता हैं। वीरता का मूल स्रोत तो स्वयं भगवान् ही हैं। वे अवतार लेकर आते हैं, और महा पराक्रमी असुरों का धर्मस्थापना हेतु विनाश करते हैं। इस प्रकार वे विक्रमशाली होने से वीर कहलाते हैं। उन विक्रमशाली परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४०२ -

ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः

शक्तिशालियों में श्रेष्ठ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Best among the Mighty.

शक्तिमतां विरिंचि आदीनामपि शक्तिमत्त्वात् शक्तिमतां श्रेष्ठः अर्थात् ब्रह्मा आदि शक्तिमानों में भी शक्तिमान् होने के कारण शक्तिमतां श्रेष्ठ हैं। सब से शक्तिमान् ब्रह्माजी होते हैं, जो अपने शक्ति और सामर्थ्य से यह अद्भुत सृष्टि की रचना करते हैं। परन्तु उनकी भी शक्ति का वास्तविक स्रोत परमात्मा स्वयं हैं। अतः वे ब्रह्माजी आदि शक्तिशालियों में श्रेष्ठ कहलाते हैं। उन शक्तिशालियों में श्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४०३ –

ॐ धर्माय नमः

धर्म स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Dharma-personified.

सर्वभूतानां धारणाद् धर्मः अर्थात् समस्त भूतों को धारण करने के कारण धर्म हैं। परमात्मा की मायाशक्ति से यह पंचभूतात्मक जगत का निर्माण हुआ है। इन पांच महाभूतों को तथा उनके कारण भूत माया को सत्ता–स्फूर्ति प्रदान करनेवाले अधिष्ठान अर्थात् आधारभूत तत्त्व स्वयं परमात्मा हैं। अतः वे सब को धारण करनेवाले होने से धर्म कहलाते हैं। उन सबको धारण करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
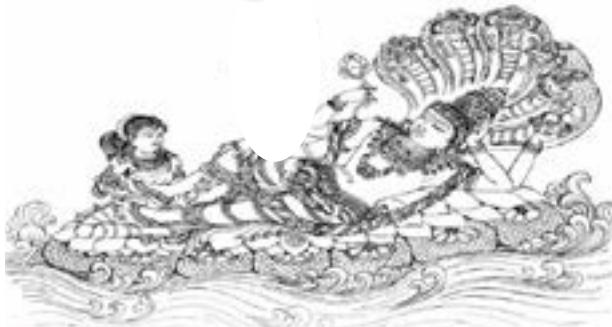
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४०४ -

ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः

धर्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Highest Knower of Dharma.

श्रुतयः स्मृतयश्च यस्य आज्ञाभूताः स एव सर्व धर्मविदाम् उत्तमः इति धर्मविदुत्तमः अर्थात् श्रुतियां और स्मृतियां जिसकी आज्ञास्वरूप हों, वही समस्त धर्मवेत्ताओं में उत्तम होना चाहिए। इसलिए भगवान् धर्मविदुत्तम हैं। श्रुति और स्मृति के माध्यम से धर्म विषयक ज्ञान तथा धर्म के आधारभूत तत्त्व का ज्ञान होता हैं। किन्तु श्रुति–स्मृति का ज्ञान उन परमात्मा से ही उद्गम हुआ है। इस प्रकार श्रुति–स्मृति परमात्मा की आज्ञास्वरूप होने से धर्मवेत्ताओं में वे उत्तम हैं। उन धर्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४०५ -

ॐ वैकुण्ठाय नमः

वैकुण्ठ स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Amalgamator of Elements.

विविधा कुण्ठा गतेः प्रतिहतिः विकुण्ठा, विकुण्ठायाः कर्ता इति वैकुण्ठः जगदारम्भे विश्लिष्टानि भूतानि परस्परं संश्लेषयन् तेषां गतिं प्रतिबध्नाति इति अर्थात् विविध कुण्ठा वा गतियों के अवरोध को विकुण्ठा कहते हैं, उस विकुण्ठा के करनेवाले होने से भगवान वैकुण्ठ हैं। जगत के आरम्भ में समस्त बिखरे हुए भूतों को परस्पर मिलाकर उनकी गति को रोक दिया करते हैं, इसीसे प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व अन्योन्य जुड़े रहते हैं। अतः भगवान् वैकुण्ठ हैं। उन वैकुण्ठस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४०६ -

ॐ पुरुषाय नमः

शरीर रूप नगर में शयन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who dwells in the Body.

पुरि शयनाद् पुरुषः, 'स वा अयं पुरुषः सर्वासु पुरीषु पुरिशयः इति श्रुतेः अर्थात् पुर याने शरीर में शयन करने के कारण पुरुष हैं। श्रुति कहती है कि 'वह यह पुरुष सब पुरों में शयन करनेवाला है। शरीर एक नवद्वार वाला नगर हैं, जिस प्रकार नगर में उसका स्वामी वास करना हैं वैसे ही विविध द्वार वाले इस शरीर रूप नगर में परमात्मा जीव रूप से वास करते हैं। इसलिए वे पुरुष कहलाते हैं। उनको सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४०७ –

ॐ प्राणाय नमः

प्राण रूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Life Breath.

प्राणिति क्षेत्रज्ञरूपेण प्राणात्मना चेष्टयन् वा प्राणः अर्थात् क्षेत्रज्ञरूप से जीवित रहते हैं, तथा प्राणवायु रूप से चेष्टा करते हैं, इसलिए वे प्राण हैं। इस शरीर रूप क्षेत्र में परमात्मा ही क्षेत्रज्ञ रूप से स्थित हैं। उन्हींकी वजह से शरीर में सांसें चलती है, उन्हींकी वजह से शरीर में प्राण की चेष्टा होती है। मानों वे ही प्राण रूप से स्थित रहकर शरीर को जीवन्त, चेष्टा करने में समर्थ बनाते हैं। अतः वे प्राण कहलाते हैं।

उन प्राण रूप से स्थित परमेश्वर को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४०८ -

ॐ प्राणदाय नमः

प्राण खण्डित करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Destroyer of Life

खण्डयति प्राणिनां प्राणान् प्रलयादिषु इति प्राणदः अर्थात् प्रलय आदि के समय प्राणियों के प्राणों का खण्डन करते हैं, इसलिए प्राणद हैं। जड़ शरीर में परमात्मा ही प्राणों को टिकाएं रखते हैं। जब प्रलय अथवा मृत्यु होती है, तो शरीर से प्राण को पृथक् कर देते हैं, जिसकी वजह से वह अव्यक्त में चला जाता है। अतः वे प्राणों को खण्डित करनेवाले प्राणद हैं। उन प्राणों को खण्डित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४०९ -

ॐ प्रणवाय नमः

प्रणवस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is "OM".

प्रणौति इति प्रणवः, 'तस्वादोमिति प्रणौति' इति श्रुतेः। प्रणम्यते इति वा प्रणवः स्तुति अथवा प्रणाम करते हैं, इसलिए प्रणव हैं। श्रुति में कहा है - अतः ओम् ऐसा कहकर प्रणाम करता हैं। प्रणव ब्रहृम का ही नाम है, क्योकि वे सदैव नवीन रहते हैं। वे कालातीत होने से कभी भी काल से प्रभावित नहीं होते हैं। वृद्धि-क्षय एवं मृत्यु रूपी विकार इन्हें स्पर्श नहीं करते हैं।

उन नित नवीन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
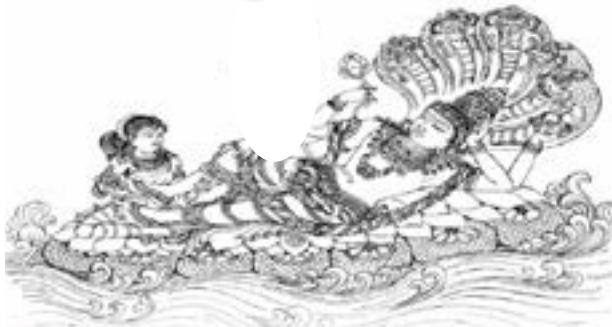
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४१० -

ॐ पृथवे नमः

प्रपंच रूप से विस्तृत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who as expansive as the cosmos.

प्रपंचरूपेण विस्तृतत्वात् पृथुः अर्थात् प्रपंचरूप से विस्तृत होने के कारण वे पृथु हैं। यह विविधतापूर्ण जगत जो पांच महाभूत की तरह विविधता से युक्त तथा अनेकों नामरूपों में पृथक्ता को प्राप्त है; वह स्वयं परमात्मा ही अपनी मायाशक्ति के द्वारा प्रस्तुत हुए हैं। इसलिए वे पृथु कहलाते हैं।

उन विविधतापूर्ण विस्तार को प्राप्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४११ -

ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

हिरण्यगर्भ स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Creator.

हिरण्यगर्भसम्भूतिकारणं हिरण्मयम् अण्डं यद् वीर्यसम्भूतम्, तदस्य गर्भ इति हिरण्यगर्भः अर्थात् हिरण्यगर्भ की उत्पत्ति का कारण हिरण्मय अण्ड जिनके वीर्य से उत्पन्न हुआ है, वे भगवान् उसके गर्भ हैं, इसलिए हिरण्यगर्भ है। परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति को धारण करके सृष्टि के संकल्प से युक्त होते हैं, तो वे स्वर्ण जैसी कान्ति से युक्त गर्भ अथवा हिरण्यगर्भ कहलाते हैं। क्योंकि उनमें सृष्टि का अनन्त अनन्त सामर्थ्य निहित होता हैं। उन हिरण्यगर्भ रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४१२ –

ॐ शत्रुघ्नाय नमः

देवताओं के शत्रु के हन्ता को नमस्कार।

I salute the one who is Destroyer of Enemies.

त्रिदशशत्रून् हन्ति इति शत्रुघ्नः अर्थात् देवताओं के शत्रु को मारते हैं, इसलिए शत्रुघ्न है। देवता लोग धर्म मार्ग का स्वयं अनुसरण करते हुए सृष्टि की व्यवस्था में अद्भुत योगदान देते हैं। जो देवताओं के इस कार्य में विघ्न उत्पन्न करते हैं, ऐसे असुरगण तथा जो स्वयं धर्ममार्ग का अनुसरण नहीं करते है, वे सब देवताओं के शत्रु है। सृष्टि के संचालन हेतु धर्मव्यवस्था को बनाए रखने हेतु भगवान देवताओं के शत्रुओं का हनन करते हैं। इसलिए वे शत्रुघ्न कहलाते हैं।

उन देवताओं के शत्रु के हन्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४१३ -

ॐ व्याप्ताय नमः

सर्वव्यापी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All Pervading

कारणत्वेन सर्वकार्याणां व्यापनाद् व्याप्तः अर्थात् कारणरूप से सब कार्यों को व्याप्त करने के कारण व्याप्त हैं। कारण सदैव कार्य के कणकण में रहता है, अर्थात् उसे व्याप्त करता है। जिस प्रकार जल लहर में व्याप्त रहता है। उसी प्रकार परमात्मा जगत के कारणभूत तत्त्व होने की वजह से वे भी समस्त जगत रूप कार्य को व्याप्त करते हैं, इसलिए वे व्याप्त कहे जाते हैं।

उन सर्वव्यापी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
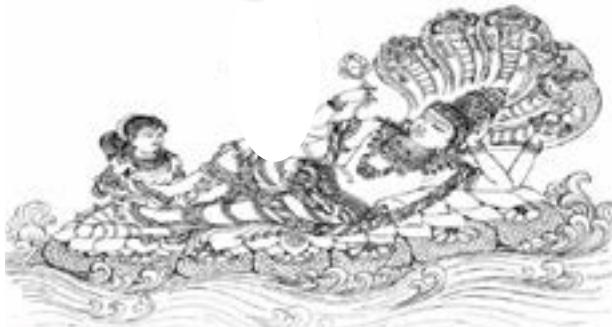
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४१४ –

ॐ वायवे नमः

वायुस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Life giving Power of Air.

वाति गन्धं करोति इति वायुः, 'पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च' इति भगवद् वचनात्। अर्थात् वाति – गन्ध करते हैं, इसलिए वायु हैं। भगवान का कथन है – 'पृथ्वी में पुण्य गन्ध मैं हूं।' परमात्मा ही जगत की तरह अभिव्यक्त हुए हैं, अतः वायु रूप से भी वे ही बह रहे हैं तथा वे ही पृथ्वी में पुण्य गन्ध की तरह से हैं, उसे वायु के माध्यम से चारों ओर प्रसारित करते हैं। अतः वे वायु कहलाते हैं।

उन वायु रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४१५ –

ॐ अधोक्षजाय नमः

हृदयगुहा में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who resides in the heart.

अधोभूते प्रत्यक् प्रवाहिते अक्षगणे जायते इति अधोक्षजः अर्थात् अक्षगणों के अर्थात् इन्द्रियों के अधोमुख अर्थात् अन्तर्मुख होने पर वे प्रकट होते हैं इसलिए वे अधोक्षज हैं। परमात्मा सर्वत्र व्याप्त होने पर भी उनका साक्षात्कार हृदयगुहा में आत्मा की तरह से ही होता है। उसके लिए इन्द्रियों द्वारा बाहरी विषयों को महत्व देना समाप्त करके अन्तर्मुख होना चाहिए। इन्द्रियां अन्तर्मुख होने पर ही वे हृदयगुहा में प्रकट होते हैं, इसलिए वे अधोक्षज कहे जाते हैं। उन अधोक्षज परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४१६ –

ॐ ऋतवे नमः

ऋतु रूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Seasons.

कालात्मना ऋतुशब्देन लक्ष्यते इति ऋतुः अर्थात् ऋतु शब्द द्वारा काल रूप से लक्षित होते हैं, इसलिए वे ऋतु हैं। काल के वशीभूत जगत सतत परिवर्तित होता हैं। काल का अस्तित्व तथा परिवर्तन छह ऋतुओं के परिवर्तन से ज्ञात होता है। इस प्रकार काल ऋतु रूप से स्थित है। तथा परमात्मा स्वयं काल अर्थात् ऋतु की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। अतः वे ऋतु शब्द से लक्षित हैं। उन ऋतु शब्द से लक्षित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
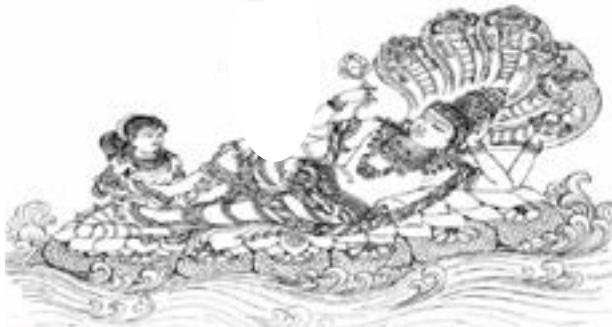
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४१७ –

ॐ सुदर्शनाय नमः

मोक्षप्रद दर्शनयुक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Auspicious to Meet.

शोभनं निर्वाणफलं दर्शनं ज्ञानम् अस्य इति अर्थात् भगवान का दर्शन अर्थात् ज्ञान अति सुन्दर निर्वाणरूप फल देनेवाला हैं। जीव स्वयं परमात्म स्वरूप होते हुए भी अज्ञान की वजह से अपने आपको संकुचित, सीमित जीव मानकर बन्धन में पडा हुआ है। जीव जब अपने हृदय में, अपनी आत्मा रूप से स्थित परमात्मा को जान लेता है, तब वह मुक्ति के प्रसाद को प्राप्त कर लेता है। अतः परमात्मा सुदर्शन कहलाते हैं। उन सुन्दर दर्शनवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४१८ –

ॐ कालाय नमः

काल स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is in the form of Time.

कलयति सर्वम् इति कालः 'कालः कलयताम् अहम्' इति भगवद् वचनात् अर्थात् सब की गणना करने के कारण काल हैं, भगवान ने स्वयं गीता में कहा हैं कि 'कलना करनेवालों में मैं काल हूं'। जीव के कर्म तथा उनके कर्मफल का हिसाब रखकर भगवान् उसके अनुरूप उन्हें काल तथा कालान्तर में फल प्रदान करते हैं। इस प्रकार वे गणना करनेवाले काल रूप से स्थित हैं। उन काल रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४१९ –

ॐ परमेष्ठिने नमः

हृदयाकाश में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who resides in our hearts.

परमे प्रकृष्टे स्वे महिम्नि हृदयाकाशे स्थातुं शीलम् अस्य इति परमेष्ठी अर्थात् हृदयाकाश के भीतर परम अर्थात् प्रकृष्ट महिमा में स्थित रहने का स्वभाव होने के कारण वे परमेष्ठी हैं। सभी जीवों के हृदयाकाश में रहते हुए भी परमात्मा उनके अज्ञान और तज्जनित विकारों से असंग रहते हैं। इस प्रकार हृदयाकाश में अपनी परं महिमा में स्थित होने से परमेष्ठी हैं।

उन हृदयाकाश में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४२० –

ॐ परिग्रहाय नमः

भक्ति ग्रहण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Receiver of Devotion.

पत्रपुष्पादिकं भक्तैः अर्पितं परिगृह्णाति इति परिग्रहः अर्थात् भक्तों के अर्पण किए हुए पत्र–पुष्पादि को ग्रहण करते हैं, इसलिए परिग्रह हैं। भगवान को श्रद्धा और भावपूर्वक पत्र, पुष्प, फल अथवा जल भी अर्पण किए जाए तो वे उसे प्रेमपूर्वक ग्रहण करते है और भक्ति का प्रसाद देते हैं। अतः वे परिग्रह कहलाते हैं।

उन परिग्रह रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४२१ -

ॐ उग्राय नमः

उग्र स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Terrible.

सूर्यादीनामपि भयहेतुत्वात् उग्रः, 'भीषोदेति सूर्य' इति श्रुतेः अर्थात् सूर्यादि के भी भय के कारण होने से उग्र हैं। श्रुति कहती हैं–इसके भय से सूर्य निकलता है।' जगत के संचालन तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिए सूर्य आदि समस्त प्रकृति के तत्त्व नियम में रहकर अपना कार्य करते हैं। ऐसा लगता है कि मानो किसी के भय से भयभीत होकर अपने अपने कर्म में रत हैं। अतः परमात्मा को उग्र कहते है। उन उग्र स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४२२ -

ॐ संवत्सराय नमः

सब के निवासस्थान परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one in whom all exists

संवसन्ति भूतानि अस्मिन्निति संवत्सरः अर्थात् सब भूत इनमें बसते हैं, इसलिए संवत्सर हैं। जिस प्रकार लहर, तथा समुद्र आदि का आधारभूत तत्त्व जल है, उनमें ही यह सब वास करते है, जल के अभाव में यह सब अस्तित्वविहीन हो जाते है। उसी प्रकार समस्त महाभूत तथा उनसे निर्मित जगत परमात्मा में वास करता हैं। परमात्मा उसके अधिष्ठानभूत तत्त्व हैं। अतः परमात्मा संवत्सर हैं।

उन सब के आधारभूत परमेश्वर को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४२३ -

ॐ दक्षाय नमः

कार्यदक्ष परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Efficient.

जगद् रूपेण वर्धमानत्वात् सर्वकर्माणि क्षिप्रं करोति इति वा दक्षः अर्थात् जगत रूप से बढ़ने के कारण, अथवा सब कार्य बड़ी शीघ्रता से करते हैं, इसलिए दक्ष हैं। परमात्मा स्वयं जगत रूप से अभिव्यक्त होते हैं, तथा उसका संचालन, विनाश भी करते हैं, आंख को खोलने और बन्द करने के समान सहजता से करते हैं। तथापि उन सबसे असंग रहते हैं। ऐसे उनके विलक्षण अन्दाज की वजह से वे दक्ष कहलाते हैं।

उन कार्यदक्ष परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४२४ –

ॐ विश्रामाय नमः

विश्रान्तिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Retreat of Samsaris.

संसारसागरे क्षुत्पिपासादि षड्‌र्मिभिः तरंगिते अविद्याद्यैः महाक्लेशैः वशीकृतानां विश्राान्तिं कांक्ष–माणानां विश्रामं मोक्षं करोति इति विश्रामः अर्थात् क्षुधा–पिपासा आदि छह उर्मियों से तरंगित संसारसागर में अविद्या आदि महान क्लेशों से वशीभूत हुए विश्राम की इच्छावाले मुमुक्षुओं को विश्राम अर्थात् मोक्ष देते हैं, इसलिए विश्राम हैं। जीव जब तक परमात्मा की शरण में नहीं जाता तब तक मुक्तिरूप विश्राम को प्राप्त नहीं कर सकता। उन विश्रान्ति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४२५ -

ॐ विश्वदक्षिणाय नमः

विश्वदक्षिण रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the most dextrous.

विश्वस्मात् दक्षिणः शक्तः, विश्वेषु कर्मसु दाक्षिण्याद् वा विश्वदक्षिणः अर्थात् सब से दक्ष अर्थात् समर्थ अथवा समस्त कार्यों में कुशल होने के कारण भगवान् विश्वदक्षिण हैं। जगत में विविध कला, कर्म आदि में अनेकों कुशल, समर्थ कलाकार तथा कर्ता आदि को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। किन्तु उन सब का मूल स्रोत तो भगवान स्वयं है। अन्य सब उनके लेश मात्र से अनुगृहीत है। अतः वे विश्वदक्षिण है। उन विश्वदक्षिण परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४२६ -

ॐ विस्ताराय नमः

जगत की तरह विस्तृत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has endless expansion.

विस्तीर्यन्ते समस्तानि जगन्ति अस्मिन्निति विस्तारः अर्थात् भगवन में समस्त लोक विस्तार पाते हैं, इसलिए वे विस्तार हैं। प्रलय काल में जगत परमात्मा पर आश्रित मायारूप अव्यक्त में विलीन होता है। तथा उत्पत्ति के समय परमात्मा स्वयं व्यक्त नाम-रूप की तरह विस्तार को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार परमात्मा जगत रूप से विस्तार को प्राप्त होने से वे विस्तार कहलाते हैं। उन जगत की तरह विस्तृत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४२७ –

ॐ स्थावरः स्थाणवे नमः

स्थिर और गतिरहित को नमस्कार।

I salute the one who is Firm & Motionless.

स्थितिशीलत्वात् स्थावरः; स्थितिशीलानि पृथिवी आदीनि तिष्ठन्ति अस्मिन्निति स्थाणुः स्थावरश्च असौ स्थाणुश्च स्थावरस्थाणुः अर्थात् स्थितिशील होने से स्थावर हैं तथा पृथ्वी आदि स्थितिशील पदार्थ उनमें स्थित हैं, इसलिए स्थाणु हैं। इस प्रकार स्थावर और स्थाणु होने से भगवान् स्थावरस्थाणु हैं। परमात्मा स्वयं गतिरहित हैं, तथा पृथ्वी जैसे स्थावर पदार्थों को आधार प्रदान करके उसे भी स्थिर रखते हैं। अतः वे स्थावरस्थाणु हैं। उन स्थावर स्थाणु रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४२८ –

ॐ प्रमाणाय नमः

प्रमाणस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Means of Knowledge.

संविदात्मना प्रमाणम् संवित् स्वरूप होने से प्रमाण हैं। परमात्मा स्वयं संवित् अर्थात् चेतनस्वरूप हैं। अतः परमात्मा को जानने हेतु किसी साधन की अपेक्षा नहीं है। किन्तु किसी भी वस्तु का ज्ञान जिस भी प्रमाण अर्थात् ज्ञान के साधन से प्राप्त करते हैं। वह प्रमाण उन्हींसे सत्ता–स्फूर्ति को प्राप्त होता है। अतः परमात्मा प्रमाणस्वरूप कहलाते हैं।

उन संवित् स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
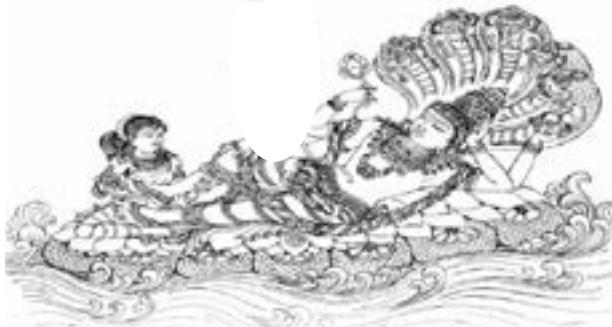
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४२९ –

ॐ बीजमव्ययाय नमः

अव्यय बीजरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Immutable Seed.

अन्यथाभाव व्यतिरेकेण कारणम् इति बीजमव्ययम् अर्थात् बिना अन्यथाभाव के ही संसार के कारण हैं, इसलिए वे बीजमव्यय हैं। जिस प्रकार रस्सी से सांप की उत्पत्ति होती है, किन्तु रस्सी में किसी भी प्रकार का परिवर्तन, विकार, जहर आदि नहीं होता है। उसी प्रकार परमात्मा इस जगत के कारण हैं, वे स्वयं ही जगत की तरह विस्तार को प्राप्त होते हैं तथापि समस्त जन्मादि विकारों से परे अखण्ड, एकरस रहते हैं। इसलिए वे अव्ययबीज कहलाते हैं।

उन अव्यय बीज रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३० -

ॐ अर्थाय नमः

अर्थरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Supplicated.

सुखरूपत्वात् सर्वैः अर्थ्यते इति अर्थः अर्थात् सुखस्वरूप होने के कारण सबसे प्रार्थना किए जाते हैं, इसलिए अर्थ हैं। परमात्मा आनन्दस्वरूप हैं। जगत में यदि किसी विषयादि से सुख की अनुभूति होती है, तो वह परमात्मा सुखस्वरूप होने से ही होती है। सभी जीव जाने-अनजाने सुखस्वरूप परमात्मा को ही पाना चाहता है। अतः वे सब के पुरुषार्थ के विषय होने से अर्थ कहे जाते हैं।

उन अर्थस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३१ -

ॐ अनर्थाय नमः

पूर्णकाम परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has nothing to Achieve

न विद्यते प्रयोजनम् आप्तकामत्वात अस्य इति अनर्थः अर्थात् आप्त (पूर्ण) काम होने के कारण उनका कोई अर्थ यानी प्रयोजन नहीं है, इसलिए वे अनर्थ हैं। जो असंतुष्ट व अपूर्ण है, तथा जिसे संतुष्ट वा पूर्ण होना है, उसे ही जगत से प्रयोजन अथवा उसकी इच्छा होती है। किन्तु परमात्मा स्वयं पूर्णस्वरूप होने से उनमें अपनी कोई भी इच्छा नहीं है। अतः वे अनर्थ हैं।

उन अनर्थ रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४३२ –

ॐ महाकोशाय नमः

महाकोश युक्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is veiled by Koshas

महान्तः कोश अन्नमयादयः आच्छादका अस्य इति महाकोशः अर्थात् अन्नमय आदि महान् कोश भगवान को ढकनेवाले हैं, इसलिए वे महाकोश हैं। परमात्मा स्वयं जीव की आत्मा की तरह से स्थित हैं। किन्तु जीव अपनी अन्नमयादि पंचकोशरूप उपाधि से तादात्म्य करने की वजह से अपने ही सत्य परमात्मा को नहीं जानते हुए संसरण करता हैं। पंचकोशात्मक उपाधि से आवरित होने की वजह से परमात्मा महाकोश कहे जाते हैं। उन महाकोश रूप प्रभु को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३३ -

ॐ महाभोगाय नमः

महान भोग रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supremely Relishable

महान् भोगः सुखरूपो अस्य इति महाभोगः अर्थात् भगवान् का सुखरूप महान भोग है, इसलिए वे महाभोग हैं। परमात्मा आनन्दस्वरूप होने की वजह से समस्त सुख के स्रोत हैं। जो उन्हें जान लेता है, वह परं आनन्द का रसपान करता है, जिसके लेश मात्र से इन्द्रादि देवता संतुष्ट होते है। अतः वे ही महाभोग रूप हैं।

उन महाभोग रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३४ -

ॐ महाधनाय नमः

महान धनस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supremely Wealthy

महत् भोगसाधनलक्षणं धनमस्य इति महाधनः अर्थात् उनका भोगसाधनरूप महान् धन है, इसलिए वे महाधन हैं। हर व्यक्ति जीवन में अधिक धन प्राप्त करके धनवान होना चाहता है, जिससे कि वह अनेकों विषयभोग करके आनन्द को प्राप्त कर सके। किन्तु परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप होने से उन्हें अन्य धन वा विषयभोग की आवश्यकता नहीं है। अपनी आनन्दस्वरूपता ही सबसे महान धन है। अतः वे महाधन कहे जाते हैं। उन महाधनरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३५ -

ॐ अनिर्विण्णाय नमः

रसस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is fulfilled yet not indifferent.

आप्तकामत्वात् निर्वेदो अस्य न विद्यते इति अनिर्विण्णः अर्थात् सम्पूर्ण कामनाएं प्राप्त होने के कारण भगवान को निर्वेदता अर्थात् उदासीनता नहीं है, इसलिए वे अनिर्विण्ण हैं। निर्वेद का अभिप्राय होता है, रसहीनता अथवा शुष्कता। जिनको जीवन में सुखप्राप्ति की इच्छा हो, किन्तु प्राप्त करने में असमर्थ हो, वहां निर्वेदता होती है। भगवान स्वयं पूर्णकाम, स्वयं रसस्वरूप होने से उनमें निर्वेद का अभाव हैं। अतः वे अनिर्विण्ण हैं। उन रसस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३६ -

ॐ स्थविष्ठाय नमः

अत्यन्त स्थूलस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supremely Gross.

वैराजरूपेण स्थितः स्थविष्ठः अर्थात् वैराज रूप से स्थित होने के कारण स्थविष्ठ हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति से इस कार्य–कारण रूप, स्थूल–सूक्ष्म जगत के रूप से स्वयं ही अभिव्यक्त हुए हैं। यह स्थूलजगत परमात्मा का विराटशरीर है। परमात्मा इस अत्यन्त स्थूल जगत के रूप में, विराट स्वरूप से स्थित होने की वजह से स्थविष्ठ हैं।

उन अत्यन्त स्थूलरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४३७ –

ॐ अभुवे नमः

अजन्मा स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Birthless

अजन्मा अभूः अर्थात् अजन्मा होने के कारण अभू हैं। परमात्मा सत् स्वरूप हैं, तथा काल से भी परे हैं, उनका कभी भी जन्म नहीं होता है। अतः वे अभुव हैं। जो भी जन्म–मरण–वान होता है, वो नश्वर भी होते हैं, और जगत का परम सत्य नश्वर हों यह अकल्पनीय है। अतः वे अजन्मा हों यह युक्तिसंगत भी है।

उन कालातीत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३८ -

ॐ धर्मयूपाय नमः

धर्म के आधारभूत परमात्मा को नमस्कार।

Pranam to the one who is the very basis of Dharma.

यूपे पशुवत् तत् समाराधनात्मका धर्माः तत्र बध्यन्ते इति धर्मयूपः अर्थात् यूप में जिस प्रकार पशु बांधा जाता है, उसी प्रकार आराधना रूप धर्म भगवान में बांधे जाते है, इसलिए वे धर्मयूप हैं। यज्ञ में बलि के लिए पशु यूप में बंधता है, अर्थात् उसका आधार यूप होता है। वैसे ही समस्त धर्म का आधार ईश्वर हैं। उन्हींको केन्द्र में रखकर समस्त योगसाधनाएं, भक्ति, उपासना आदि होते हैं। तथा वे ही धर्म के गन्तव्य रूप होते हैं। अतः उन्हें धर्मयूप कहा हैं। उन धर्म के आधारस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४३९ -

ॐ महामखाय नमः

महान यज्ञस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Great Yagna.

यस्मिन् अर्पिता मखा यज्ञा निर्वाणलक्षण फलं प्रयच्छन्तो महान्तो जायन्ते सः महामखः अर्थात् जिनको अर्पित किए हुए यज्ञ निर्वाणरूप फल देते हुए महान् हो जाते हैं, वे भगवान् महामख हैं। परमात्मा के प्रति अर्पणबुद्धि से युक्त होना यज्ञभाव से युक्त होना है। इससे चित्तशुद्धि होकर परमात्मा के ज्ञान की पात्रता तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है। अर्थात् यज्ञ का पर्यवसान परमात्मप्राप्ति अर्थात् मोक्षरूप फल की दिशा में यात्रा है। अतः परमात्मा महामख हैं।

उन महान यज्ञ स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
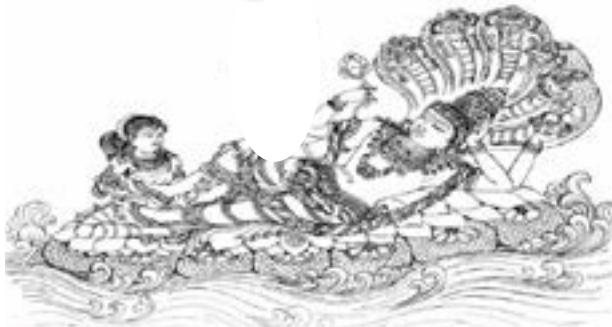
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४० -

ॐ नक्षत्रनेमये नमः

नक्षत्रनेमि रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Hub of Stars.

सज्योतिषां चक्रं भ्रामयन् तारामयस्य शिशुमारस्य पुच्छदेशे व्यवस्थितो ध्रुवः। तस्य शिशुमारस्य हृदये ज्योतिश्चक्रस्य नेमिवत् प्रवर्तकः स्थितो विष्णुः इति नक्षत्रनेमि, अर्थात् ज्योतिश्चक्र के सहित सम्पूर्ण नक्षत्र मण्डल को भ्रमाता हुआ ध्रुव तारामय शिशुमार चक्र के पुच्छदेश में स्थित है। उसके मध्य में जोतिश्चक्र की नेमि अर्थात् केन्द्र के समान प्रवर्तक रूप से भगवान विष्णु वर्तमान हैं अतः नक्षत्रनेमि कहलाते हैं। उन नक्षत्रों को नियंत्रित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
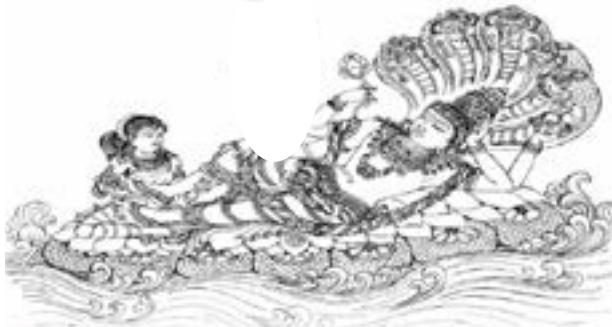
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४१ -

ॐ नक्षत्रिणे नमः

चन्द्रमा रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is in the Form of Moon.

चन्द्ररूपेण नक्षत्री, नक्षत्राणाम् अहं शशी इति भगवद् वचनात् अर्थात् चन्द्ररूप होने से भगवान् नक्षत्री हैं, गीता में भगवान ने भी बताया कि 'नक्षत्रों में मैं चन्द्रमा हूं।' परमात्मा स्वयं ही सृष्टिरूप से अभिव्यक्त हुए हैं, अतः समस्त नक्षत्र भी वही हैं। उन समस्त नक्षत्रों में भी सर्वोत्कृष्ट विभूति की तरह चन्द्रमा रूप से वे ही स्थित हैं। अतः वे नक्षत्ररूप हैं।

उन नक्षत्र रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४२ -

ॐ क्षमाय नमः

सर्व कार्यों में समर्थ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Efficient.

समस्तकार्येषु समर्थः क्षमः अर्थात् समस्त कार्यों में समर्थ होने के कारण क्षम हैं। इसलिए क्षम हैं। भगवान के उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयरूप कार्य अत्यन्त दिव्य है। इतना ही नहीं, वे जब धर्मस्थापना हेतु अवतार धारण करके आते हैं, तब अनेकों दिव्य, अलौकिक कार्य करते हैं, किन्तु उन सब से असंग रहते हैं। यह ही उनके कर्मों की दिव्यता है। ऐसे दिव्य अलौकिक कर्म करने की क्षमता वाले परमात्मा क्षम स्वरूप हैं। उन सक्षम परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४३ -

ॐ क्षामाय नमः

क्षाम रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Sole of Survivor.

सर्वविकारेषु क्षपितेषु स्वात्मनावस्थितः इति क्षामः अर्थात् समस्त विकारों के क्षीण हो जाने पर भगवान् आत्मभाव से स्थित रहते हैं, इसलिए वे क्षाम हैं। परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति से इस विकारी जगत की तरह अभिव्यक्त होते हैं, उनमें स्थित रहते हैं। इस जगत में सतत विकार होने पर भी उनके अधिष्ठानस्वरूप होते हुए भी वे अविकारी और असंग रहते हैं यह ही उनका क्षामरूप हैं।

उन क्षाम रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४४ -

ॐ समीहनाय नमः

सम्यक् इच्छावाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Well-Wisher.

सृष्टि आदि अर्थं सम्यक् इहते इति समीहनः अर्थात् सृष्टि आदि के लिए सम्यक् ईहा करते हैं, इसलिए वे समीहन हैं। ईश्वर करुणानिधान हैं। वे प्रलय के उपरान्त जीवों के कर्म और कर्मफल देने हेतु सृष्टि की रचना की इच्छा करते हैं, और उसका संकल्प करके सृष्टि की रचना करते हैं। अतः वे समीहन कहलाते हैं।

उन सृष्टि की सम्यक् इच्छा से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४५ -

ॐ यज्ञाय नमः

यज्ञस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is in the form of Yagna.

सर्व यज्ञस्वरूपत्वाद् यज्ञः अर्थात् सर्व यज्ञस्वरूप होने के कारण वे यज्ञ हैं। यह सृष्टि परमात्मा का समष्टि शरीर हैं। इस पूरी समष्टि के द्वारा एक यज्ञ चल रहा है, जहां प्रत्येक प्रकृति के तत्त्व अन्योन्य आश्रित हैं, सभी का सभी के अस्तित्व में योगदान है। इसी वजह से सृष्टि का संचालन सुचारु रूप से हो रहा है। परमात्मा स्वयं ही यह समष्टि रूप होने के कारण वे यज्ञस्वरूप हैं।

उन यज्ञस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४६ -

ॐ इज्याय नमः

पूजनीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Reverential.

यष्टव्यः अपि अयमेव इति इज्यः अर्थात् यष्टव्य अर्थात् पूजनीय भगवान ही हैं, इसलिए इज्य हैं। परमात्मा की महिमा अपरंपार है। समस्त ऋषि–मुनि, देवता, महात्मागण उन्हीं की महिमा का गुणगान करते हैं। अन्य समस्त देवता आदि उन महिमावान परमात्मा की आंशिक अभिव्यक्ति मात्र है। अतः परमात्मा ही पूजनीय हैं

उन पूजनीय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
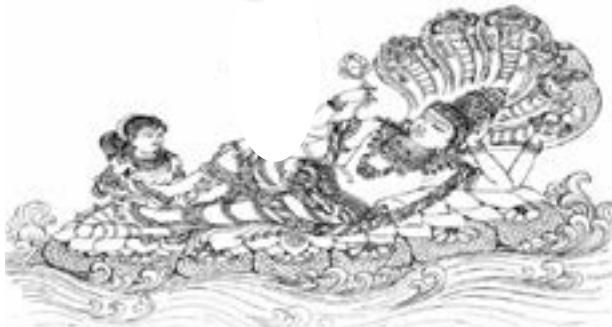
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४७ -

ॐ महेज्याय नमः

सबसे अधिक पूजनीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Most Worshipful.

सर्वासु देवतासु यष्टव्यासु प्रकर्षेण यष्टव्यो मोक्षफल- दातृत्वाद् इति महेज्यः अर्थात् समस्त यष्टव्य देवताओं में मोक्षफल देनेवाले भगवान ही सर्वाधिक यष्टव्य हैं, अतः वे महेज्य हैं। देवताओं की आराधना करने पर वे प्रसन्न होकर स्वर्गादि भोगरूप फल प्रदान करते हैं। किन्तु परमात्मा की आराधना का सर्वोत्कृष्ट फल होता है, मोक्ष। अतः परमात्मा सबसे अधिक पूजनीय हैं।

उन महेज्य परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४४८ –

ॐ क्रतवे नमः

क्रतु स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Yagna involving Sacrifice.

यूप सहितो यज्ञः क्रतुः अर्थात् यूपसहित यज्ञ क्रतु कहलाता हैं, भगवान तद्रूप होने से क्रतु हैं। यह सम्पूर्ण जगत का संचालन एक यज्ञरूप है। तथा परमात्मा ही इस जगत रूप में अभिव्यक्त हैं, अतः वे यज्ञस्वरूप तो है ही, तथा उसकी व्यवस्था का आधार जो धर्मरूप यूप है, वह भी परमात्मा हैं। एवं धर्मरूप यूप समेत जगत रूप यज्ञस्वरूप परमात्मा ही क्रतु हैं। उन क्रतुस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
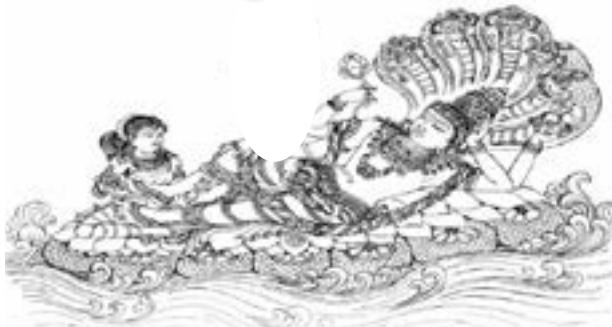
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४४९ -

ॐ सत्राय नमः

जगत से रक्षा करनेवाने परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who protects us from world

सतः त्रायते इति सत्रः अर्थात् कार्यरूप जगत से रक्षा करते हैं, इसलिए भगवान् सत्र हैं। यह अभिव्यक्त कार्यरूप जगत जिसके विविध शब्दादि विषय है, वह क्षणिक, नाशवान और जड़ है। उसे ही जीवन का लक्ष्य मानकर जीने पर जीवन शोकादियुक्त होता है। अतः परमात्मा जीवन में ऐसी परिस्थितियां प्रदान करके उन शब्दादि विषयों से मोह छुडवाते हैं, जिससे आत्मज्ञान हेतु प्रवृत्ति हो सके। इस प्रकार इस कार्यजगत से रक्षा करने के कारण वे सत्र हैं। उन जगत से रक्षा करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
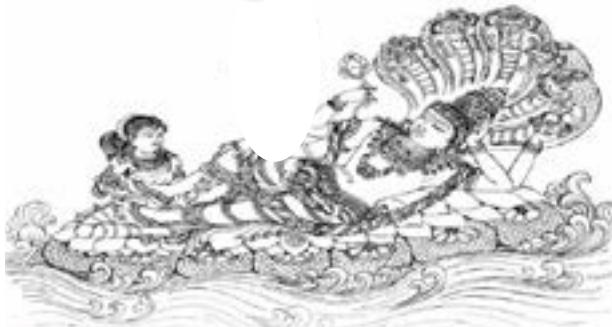
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४५० -

ॐ सतां गतये नमः

सत्पुरुषों की गतिरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Goal of Sadhakas.

सतां मुमुक्षूणां नान्या गतिः इति सतां गतिः। अर्थात् सत्पुरुषों अथवा मुमुक्षूओं की कोई और गति अर्थात् लक्ष्य नहीं हैं, इसलिए वे सतां गति हैं। परमात्मा के ज्ञान से अर्थात् परमात्मा को अपनी आत्मा की तरह जानने से ही मुक्ति प्राप्त होती है। अतः मुमुक्षु तथा सत्य के जिज्ञासु इसी दिशा में प्रयास करते हैं। उनके जीवन का लक्ष्य एक मात्र परमात्मा ही है। अतः वे सतां गति कहलाते हैं। उन सत्पुरुषों की गति रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४५१ -

ॐ सर्वदर्शिने नमः

सर्वदर्शी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All-Knower.

सर्वेषां प्राणिनां कृताकृतं सर्वं पश्यति स्वाभाविकेन बोधेन इति सर्वदर्शी अर्थात् अपने स्वाभाविक बोध से समस्त प्राणियों के सम्पूर्ण कर्म-अकर्म को देखते हैं, इसलिए सर्वदर्शी हैं। परमात्मा समस्त प्राणियों के हृदय में साक्षी रूप से स्थित रहकर उन सब के संकल्प तथा तत्प्रेरित शुभ-अशुभ कर्म को जाननेवाले हैं। किसी भी प्राणी के कर्म उनसे छिपे नहीं रहते। इसलिए वे सर्वदर्शी कहलाते हैं।

उन सर्वदर्शी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४५२ -

ॐ विमुक्तात्मने नमः

विमुक्तस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Ever Liberated Self.

स्वभावेन विमुक्तः आत्मा यस्य इति, विमुक्तश्च असौ आत्मा च इति वा विमुक्तात्मा अर्थात् स्वभाव से ही जिनकी आत्मा मुक्त है अथवा विमुक्त भी हैं और आत्मा भी हैं, वे भगवान विमुक्तात्मा हैं। परमात्मा एक अद्वय स्वरूप हैं। उनसे पृथक् कुछ भी नहीं है, जिससे उनमें बन्धन हो सके। जो कुछ भी अन्य प्रतीत हो रहा है, वह सब परमात्मा पर आरोपण मात्र है। अतः वे विमुक्तात्मा हैं।

उन विमुक्त स्वभाववाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४५३ -

ॐ सर्वज्ञाय नमः

सर्वज्ञ स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Omniscient.

सर्वश्च असौ ज्ञश्च इति सर्वज्ञः, 'इदं सर्व यदयमात्मा' इति श्रुतेः अर्थात् जो सर्व है और ज्ञाता है, वह परमात्मा सर्वज्ञ हैं। श्रुति कहती है – 'यह जो कुछ है, सब आत्मा ही है।' परमात्मा चेतनस्वरूप हैं। मन के समस्त विचार, भावनाएं, संकल्प, प्रेरणाएं तथा शरीर, इन्द्रियादि सब कुछ उनसे ही चेतनवान तथा प्रकाशित होते हैं। एवं सबको प्रकाशित करने के द्वारा सब को जानते है, इसलिए वे सर्वज्ञ हैं।

उन सर्वज्ञ स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
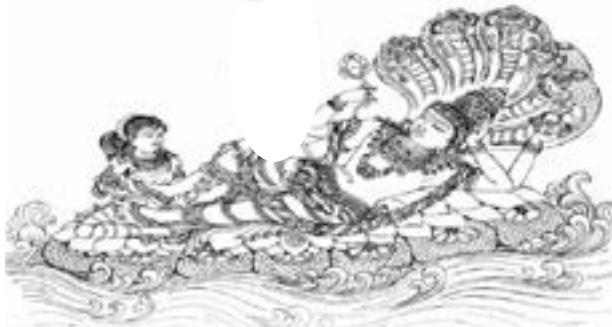
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४५४ -

ॐ ज्ञानमुत्तमाय नमः

उत्तमज्ञान के विषयरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Supreme Knowledge.

ज्ञानमुत्तमम् इति ज्ञानं प्रकृष्टम् अजन्यं अनवच्छिन्नं सर्वस्य साधकतम् इति ज्ञानमुत्तमं ब्रह्म अर्थात् जो सर्वोत्तम, अजन्य अर्थात् नित्यसिद्ध, अनवच्छिन्न अर्थात् देश, काल, वस्तु की सीमासे परे और सबका अत्यन्त साधक ज्ञान है, वह ज्ञानमुत्तमम् कहलाता है। जगत के सभी लौकिक ज्ञान, अथवा अपराविद्या देश, काल, वस्तु से सीमित के सन्दर्भ में होता है। किन्तु परमात्मा का ज्ञान पराविद्या है, जो समस्त सीमाओं से परे तत्त्व का ज्ञान, मुक्ति का हेतु है। अतः वे ज्ञानमुत्तम कहलाते हैं। उन उत्तम ज्ञान के विषय रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४५५ -

ॐ सुव्रताय नमः

दृढ निश्चयी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Pure Vow.

शोभनं व्रतम् अस्य इति सुव्रतः अर्थात् भगवान का शुभ व्रत है, इसलिए वे सुव्रत हैं। रामायण में रामचन्द्रजी का यह वाक्य है - 'जो एक बार भी मेरी शरण आकर 'मैं तुम्हारा हूं' ऐसा कहकर मांगता है, उसे मैं सब प्राणियों से अभय कर देता हूं - यह मेरा व्रत है।' भगवान का यह व्रत है कि शरणागत की रक्षा करना। फिर कोई कैसा भी पापी हो या पुण्यात्मा, देवता हो या असुर; उन सबमें भेद किए बगैर जो भी शरण में आता है, उनकी रक्षा करना। अतः वे सुव्रत हैं। उन सुव्रत भगवान को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४५६ –

ॐ सुमुखाय नमः

सुन्दर मुखवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Enchanting Countenance.

सर्वविद्या उपदेशेन सुमुखः अर्थात् समस्त विद्याओं का उपदेश करने के कारण सुमुख हैं। समस्त ज्ञान की निधिरूप वेदशास्त्र में सम्पूर्ण अपरा ज्ञान अर्थात् लौकिक तथा पारलौकिक जगत से सम्बद्ध, तथा पराज्ञान जो परमात्मा का मुक्तिविषयक ज्ञान है, वह उसमें निहित हैं। यह वेदशास्त्र परमात्मा के ही मुख से आविर्भूत हुए हैं। अतः वे सुमुख हैं।

उन हिरण्यगर्भ रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
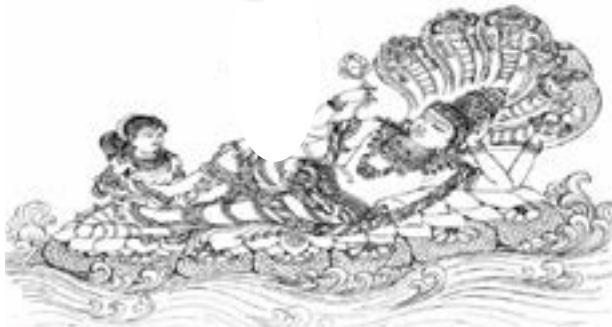
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४५७ –

ॐ सूक्ष्माय नमः

सूक्ष्मस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the most Subtle.

शब्दादिस्थूलकारणरहितत्वात्, शब्दादयो हि आकाश आदीनां उत्तरोत्तरस्थूलकारणानि, तदभावात् सूक्ष्मः अर्थात् शब्दादि स्थूलकारणों से रहित होने से वे सूक्ष्म हैं। शब्दादि विषय ही आकाशादि भूतों की उत्तरोत्तर स्थूलता का कारण हैं; उनका अभाव होने से वे सूक्ष्म हैं। कार्य की अपेक्षा कारण सदैव सूक्ष्म होता है। आकाश सबसे प्रथम महाभूत होने की वजह से वह सबसे सूक्ष्म है। किन्तु आकाश भी परमात्मा के कार्यरूप है, तथा परमात्मा किसी का भी कार्य नहीं है। अतः वे सबसे सूक्ष्म है। उन सूक्ष्मस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४५८ -

ॐ सुघोषाय नमः

सुघोष रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Auspicious Sounds.

शोभनो घोषो वेदात्मको अस्य इति अर्थात् भगवान् का वेदरूप सुन्दर घोष है, इसलिए वे सुघोष हैं। जगत में सबसे सुन्दर और कल्याणकारी घोष वेदशास्त्र है। वेदों में अत्यन्त पामर से लेकर सब प्रकार के अधिकारी का कल्याण हो, और मोक्ष रूप परं पुरुषार्थ की दिशा में यात्रा कर सके, यह रहस्य प्रतिपादित है। यह वेदशास्त्र परमात्मा से ही अभिव्यक्त हुए है, अर्थात् परमात्मा का ही घोष है। उन सुघोष रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४५९ –

ॐ सुखदाय नमः

सुख देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is bestower of Happiness.

सद्वृत्तानां सुखं ददाति इति सुखदः अर्थात् सदाचारियों को सुख देते हैं – इसलिए वे सुखद हैं। सदाचार वह होता है, जिसमें अन्य के प्रति संवेदना के साथ अपने लक्ष्य की सिद्धि की प्रेरणा है, अर्थात् उदार दृष्टिकोण है। सृष्टि के संचालन हेतु यही इष्ट है। ईश्वर की व्यवस्था के अन्तर्गत वे स्वाभाविक ही सुख का अनुभव करते है। इस तरह भगवान स्वयं ही सुखप्रदान करते हैं।

उन सुख देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६० -

ॐ सुहृदे नमः

प्रति-उपकार निरपेक्ष परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Intimate Friend.

प्रत्युपकारनिरपेक्ष तयोपकारित्वात् सुहृत् अर्थात् बिना प्रत्युपकार की इच्छा के ही उपकार करनेवाले होने से सुहृत् हैं। जगत में आस्तिक हो या नास्तिक, पापी हो या पुण्यात्मा, परमात्मा उन सब के प्रति समान हैं। वे सब को ही जीवन, कर्म हेतु परिस्थितयां, कर्मफल आदि प्रदान करते हैं। सब के उपर सतत कृपा बरसाते हैं। वे पूर्णकाम होने की वजह से उनमें किसी प्रकार की प्रति उपकार की अपेक्षा नहीं है। इसलिए वे सुहृद् कहे जाते हैं।

उन सुहृद् परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६१ -

ॐ मनोहराय नमः

मनोहर रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Beauty Incarnate.

निरतिशय आनन्दरूपत्वात् मनो हरति इति मनोहरः, 'यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति' इति श्रुतेः। अर्थात् अत्यन्त आनन्दस्वरूप होने के कारण मन का हरण करते हैं, इसलिए मनोहर हैं। श्रुति कहती है– जो भूमा है, वह ही सुख है, अल्प में सुख नहीं है। प्रत्येक जीव का मन उसी विषय में बलात् आकर्षित होता है, जिसमें सुख की अनुभूति हो। उन विषयों के अल्प आनन्द का मूलस्रोत आनन्दस्वरूप परमात्मा ही है। वे ही मानों विषयों के माध्यम से मन को अपनी ओर आकर्षित करते है। अतः परमात्मा मनोहर कहलाते हैं। उन मनोहारि परमात्मा को सादर नमन।।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६२ -

ॐ जितक्रोधाय नमः

क्रोध को जीते हुए परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Conquerer of Anger.

जितः क्रोधः येन स जितक्रोधः वेदमर्यादास्थापनार्थं सुरारीन् हन्ति न तु कोपवशात् इति; अर्थात् जिन्होंने क्रोध को जीत लिया है, वे भगवान् जितक्रोध हैं, वे वेद की मर्यादा स्थापित करने के लिए ही असुरों को मारते हैं, क्रोधवश नहीं। सृष्टि में धर्म की व्यवस्था हेतु तथा उसमें बाधक असुरों को मारने हेतु भगवान स्वेच्छा से क्रोध को धारण करते हैं, और असुरों का संहार करते हैं, तथा कार्य की समाप्ति हो जाने पर तलवार को म्यान में डालने के समान उसे समेट लेते हैं। इसलिए वे जितक्रोध कहलाते हैं। उन जितक्रोध परमात्मा का सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६३ -

ॐ वीरबाहवे नमः

बलशाली बाहुवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Valient Arms.

त्रिदशशात्रून् निघ्नन् वेदमर्यादां स्थापयन् विक्रमशाली बाहुः अस्य इति वीरबाहुः अर्थात् देव–शत्रुओं को मारकर वेद की मर्यादा को स्थापित करनेवाली भगवान् की बाहु अति विक्रमशालिनी है, इसलिए वे वीरबाहु हैं। जब जब अधर्म धर्म के उपर हावि होता है, तब सृष्टि का सन्तुलन बनाए रखने हेतु परमात्मा अवतरित होते हैं, और उन शक्तिशाली अधर्मियों को पराभूत करते हैं। ऐसे समर्थ, शक्तिशाली परमात्मा वीरबाहु कहे जाते हैं। उन शक्तिशाली परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
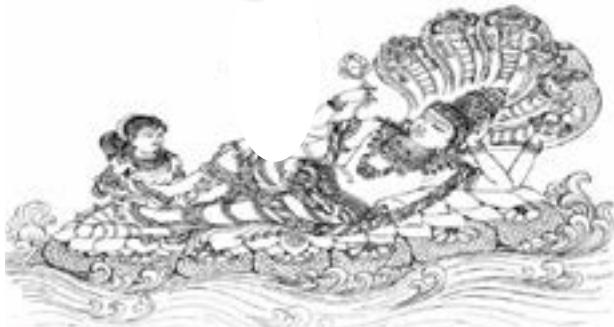
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४६४ –

ॐ विदारणाय नमः

विदीर्ण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Tearer of the Wickeds.

अधार्मिकान् विदारयति इति विदारणः अर्थात् अधर्मियों को विदीर्ण करने के कारण भगवान् विदारण हैं। भक्तों की रक्षा करने हेतु अधर्मियों का भगवान विनाश करते हैं। भक्त प्रहलाद की रक्षा हेतु भगवान स्वयं नरसिंह अवतार को धारण करके प्रहलाद के विरोधी असुरराज हिरण्यकशिपु को अपने तीक्ष्ण नाखून से विदीर्ण कर दिया था। अतः वे विदारण कहलाते हैं। उन अधर्मियों को नष्ट करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६५ -

ॐ स्वापनाय नमः

माया से मोहित करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Mighty Stupefying Force.

प्राणिनः स्वापयन् आत्मसम्बोधविधुरान् मायया कुर्वन् स्वापनः अर्थात् प्राणियों का सुलाने यानी जीवों को माया से आत्मज्ञानरूप जागृति से रहित करने के कारण स्वापन है। जीव का सत्य स्वयं परमात्मा हैं, किन्तु माया के वशीभूत होकर अपनी आत्मा की तरह से स्थित परमात्मा को नहीं जानते हुए एक अल्पज्ञ जीव मात्र मान लेता है। उसके उपरान्त संसरण करता है। इस प्रकार परमात्मा अपनी मायाशक्ति से मोहित करके मानों जीव को अज्ञाननिद्रा में सूलाते हैं। उन माया से मोहित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६६ -

ॐ स्ववशाय नमः

स्वतन्त्र रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Totally Independent.

स्वतन्त्रः स्ववशः, जगत् उत्पत्ति–स्थिति–लयहेतुत्वात् अर्थात् जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण होने से स्वतंत्र हैं, इसलिए वे स्ववश हैं। परमात्मा अपनी मायाशक्ति को धारण करके जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय करते हैं। ऐसा करने में वे स्वतंत्र हैं। अर्थात् माया उनके वश में है, वे माया के वश में नहीं हैं। ऐसे पूर्णतः स्वतंत्र होने के कारण वे स्ववश कहलाते हैं।

उन स्वतंत्र रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६७ -

ॐ व्यापिने नमः

सर्वव्यापी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All-Pervading.

आकाशवत् सर्वगतत्वात् व्यापी, 'आकाशवत् सर्व–गतश्च नित्यः' इति श्रुतेः। अर्थात् आकाश के समान सर्वव्यापी होने से व्यापी हैं। श्रुति कहती है– 'आकाश के समान सर्वगत और नित्य हैं।' कोई भी पदार्थ सूक्ष्मता के तारतम्य से व्यापक होता जाता है। जिस प्रकार पंचमहाभूत के बने हुए इस जगत में सब से सूक्ष्म महाभूत आकाश है। इसलिए वह सब जगह व्याप्त है। किन्तु परमात्मा उनसे भी सूक्ष्म होने से आकाश को भी व्याप्त करते हैं। परमात्मा सूक्ष्मातिसूक्ष्म होने से सर्वव्यापी हैं। उन सर्वव्यापी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६८ -

ॐ नैकात्मने नमः

नैकात्म रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has become many.

जगदुत्पत्त्यादिषु आविर्भूतनिमित्तशक्तिभिः विभूतिभिः अनेकधा तिष्ठन् नैकात्मा अर्थात् जगत की उत्पत्ति आदि में नैमित्तिक शक्तियों को प्रकट करनेवाली विभूतियों के द्वारा नाना प्रकार से स्थित हैं, इसलिए नैकात्मा हैं। परमात्मा स्वयं एक होते हुए भी अपनी मायाशक्ति से इस विविधतापूर्ण नामरूपात्मक जगत की तरह अभिव्यक्त होकर उन-उनकी तरह स्थित हैं। इसलिए वे नैकात्मरूप हैं। उन नैकात्म रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
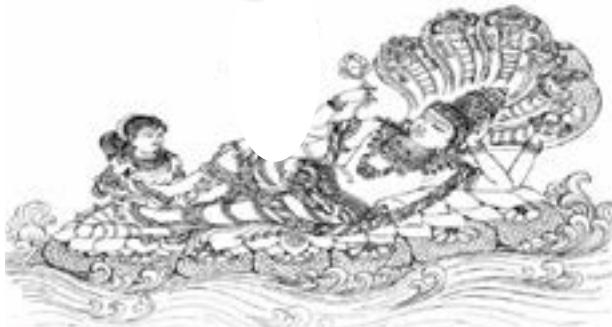
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४६९ -

ॐ नैककर्मकृते नमः

अनेक कर्मो के कर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Multi-Functionary.

जगदुत्पत्ति-सम्पत्ति-विपत्ति-प्रभृति कर्माणि करोति इति नैककर्मकृत् अर्थात् संसार की उत्पत्ति, उन्नत्ति, और विपत्ति आदि अनेक कर्म करते हैं, इसलिए वे नैककर्मकृत् हैं। परमात्मा जगत की उत्पत्ति मात्र ही नहीं करते हैं, किन्तु जगत का संचालन भी करते हैं, जगत की वृद्धि और विकास करते हैं तथा साथ ही साथ जगत का संहार भी करते हैं। इस प्रकार अनेक कर्म करने के कारण वे नैककर्मकृत् कहलाते हैं। उन अनेक कर्म करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४७० –

ॐ वत्सराय नमः

वत्सर रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one in whom all exists.

वसति अत्राखिलम् इति वत्सरः अर्थात् सब कुछ उन्हींमें बसा हुआ है, इसलिए वे वत्सर हैं। जिस प्रकार जल से उत्पन्न हुई लहर जल में ही वास करती है, अर्थात् जल से ही उत्पन्न होती है, जल में ही स्थित रहती है। जल के बगैर उसका अस्तित्व सम्भव ही नहीं होता है। उसी प्रकार परमात्मा पर आश्रित यह सम्पूर्ण जगत परमात्मा में ही वास करता हैं। परमात्मा के बगैर जगत का अस्तित्व असम्भव है। अतः वे वत्सर कहलाते हैं। उन वत्सर रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४७१ –

ॐ वत्सलाय नमः

भक्तों के स्नेही परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one for whom devotees are dear.

भक्तस्नेहित्वात् वत्सलः अर्थात् भक्तों के स्नेही होने के कारण वे वत्सल हैं। परमात्मा आनन्दस्वरूप हैं, और आनन्द की अभिव्यक्ति प्रेम की तरह होती है। जैसे अग्नि के समीप जानेवाले को अग्नि की उष्णता का अनुभव होता है। वैसे ही जो भी परमात्मा के भक्त होते हैं, उन्हें परमात्मा के स्नेह की अनुभूति होती है। इसलिए वे भक्तवत्सल कहे जाते हैं।

उन भक्तों के स्नेही परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४७२ -

ॐ वत्सिने नमः

जगत्–पिता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Universal Father.

जगत् पितुः तस्य वत्सभूताः प्रजा इति वत्सी अर्थात् जगत् पिता होने से प्रजा उनकी वत्स अर्थात् सन्तानस्वरूप हैं, इसलिए वे वत्सी हैं। सन्तानयुक्त पिता को वत्सी कहा जाता है। यह समस्त जगत रूप प्रजा परमात्मा से ही उत्पन्न हुई है, इसलिए वे उनकी सन्तान है। तथा परमात्मा जगत्पिता हैं। जगत रूपी प्रजा के पिता होने से वे वत्सी कहलाते हैं।

उन जगत् पिता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४७३ -

ॐ रत्नगर्भाय नमः

समुद्र रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has Jewels in his Womb.

रत्नानि गर्भभूतानि अस्य इति समुद्रो रत्नगर्भः अर्थात् रत्न जिसके गर्भरूप हैं, उस समुद्र का नाम रत्नगर्भ हैं। अत्यन्त विशाल और अथाह गहरे समुद्र के गर्भ में अनेकों बेशकिमती रत्न समाए होते है। यह समुद्र परमात्मा की दिव्य विभूति है। गीता में भगवान अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए बताते हैं कि, 'सरसामस्मि सागरः' जलाशयों में हम सागर हैं। इसलिए वे रत्नगर्भ हैं। अपने उदर में रत्नों को समाए हुए समुद्ररूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४७४ -

ॐ धनेश्वराय नमः

धनाधिपति परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Wealth.

धनानाम् ईश्वरः अर्थात् धनों के स्वामी होने के कारण धनेश्वर हैं। भगवान् गीता में अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए बताते हैं कि 'वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।' धनवानों में हम कुबेर हैं।' पुराणों के अनुसार कुबेर धन के अधिपति देवता हैं, और वे सब से धनी माने जाते हैं। वे भगवान की विभूति रूप होने से भगवान धनेश्वर अर्थात् कुबेर हैं।

उन धनाधिपति परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४७५ –

ॐ धर्मगुपे नमः

धर्म के रक्षक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Protector of Dharma.

धर्मं गोपयति इति धर्मगुप्, 'धर्मसंस्थानाय सम्भवामि युगे युगे।' अर्थात् भगवान धर्म की रक्षा करते हैं, अतः वे धर्मगुप् हैं। भगवान का वचन है – 'धर्म की स्थापना के लिए मैं प्रत्येक युग में अवतार लेता हूं।' जब अधर्म की वृद्धि, धर्म को अभिभूत करने लगती है, तब भगवान अपनी माया से शरीर धारण कर सृष्टि की व्यवस्था हेतु अधर्म को नष्ट कर धर्म की रक्षा करते हैं। अतः वे धर्मगोप्ता कहलाते हैं।

उन धर्मरक्षक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४७६ -

ॐ धर्मकृते नमः

धर्मकृत परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who establishes Dharma.

धर्माधर्मविहीनो अपि धर्ममर्यादा स्थापनार्थं धर्ममेव करोति इति धर्मकृत् अर्थात् स्वयं धर्म-अधर्म से रहित होने पर भी धर्म की मर्यादा स्थापित करनेके लिए धर्म ही करते हैं, इसलिए धर्मकृत् हैं। परमात्मा स्वयं धर्म और अधर्म से परे हैं, परन्तु धर्म की मर्यादा स्थापना हेतु वे समय-समय पर अवतार लेते हैं, और धर्म का पालन करते हैं तथा अधर्म का नाश करके धर्म को स्थापित करते हैं। अतः वे धर्मकृत् कहे जाते हैं।

उन धर्म स्थापक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
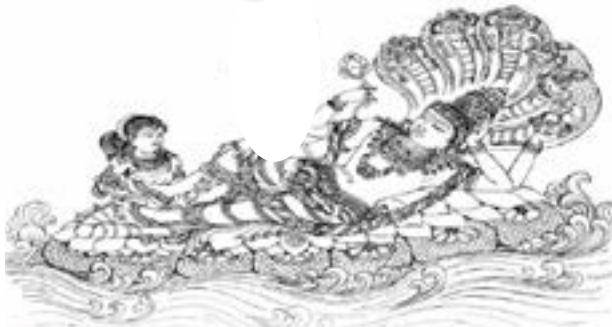
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४७७ –

ॐ धर्मिणे नमः

धर्मी रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supporter of Dharma.

धर्मान् धारयति इति धर्मी अर्थात् धर्मों को धारण करनेवाले हैं, इसलिए धर्मी हैं। धर्म का अर्थ होता है, धारण करना। समस्त ब्रह्माण्ड धर्म के द्वारा धारण होता है। इस धर्म को धारण करने वाले स्वयं परमात्मा हैं। जिस प्रकार लहरों को धारण करनेवाला समुद्र है, और समुद्र को धारण करनेवाला जल है। उसी प्रकार ब्रह्माण्ड का अस्तित्व परमात्मा की वजह से है। अतः वे धर्मी कहलाते हैं।

उन धर्मीरूप परमात्मा का सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
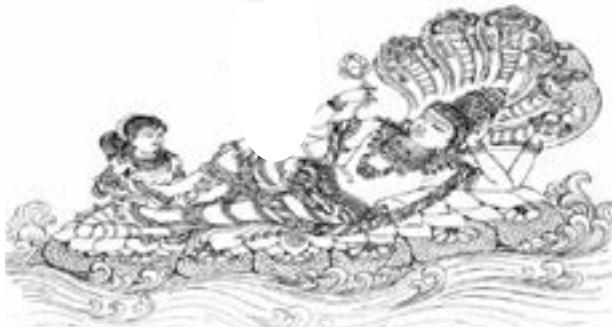
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४७८ -

ॐ सते नमः

सत् स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Existence.

अवितथं परं ब्रह्म सत् 'सदेव सोम्य इदम्' इति श्रुतेः अर्थात् सत्यस्वरूप परब्रह्म ही सत् हैं। श्रुति कहती है– 'हे सोम्य! यह सत् ही पहले था।' जिसका अस्तित्व भूत, भविष्यादि तीनों कालों में है अर्थात् जो काल से परे है, वह सत् कहलाता है। सृष्टि के पूर्व मात्र परमात्मा ही थे, काल की उत्पत्ति परमात्मा से ही हुई है। अतः परमात्मा स्वयं काल से परे होने की वजह से सत् स्वरूप हैं।

उन सत्स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४७९ –

ॐ असते नमः

असत् स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Non-existence.

अपरं ब्रह्म असत्, 'वाचारम्भणं विकारो नामधेयम्' इति श्रुतेः अर्थात् प्रपंच रूप होने से अपर ब्रह्म असत् है; जैसा कि श्रुति कहती है – 'विकार केवल नाममात्र और वाणी का विलास ही है।' परमात्मा स्वयं समस्त प्रपंच से परे हैं। तथा समस्त नामरूपात्मक जगत की तरह परमात्मा ही अभिव्यक्त हुए हैं। जो कि जल में लहर की प्रतीति की तरह नाममात्र अर्थात् असत् है। इन असत् नामरूपात्मक प्रपंच की तरह अभिव्यक्त परमात्मा ही हैं।

उन असत् स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४८० –

ॐ क्षराय नमः

क्षररूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Perishable.

सर्वाणि भूतानि क्षरम् अर्थात् समस्त भूत क्षर है, वह परमात्मस्वरूप ही हैं। जिस प्रकार नाशवान और विकारी लहरें वस्तुतः जल ही है। उसी प्रकार इस नाशवान, विकारी भूतात्मक जगत भी वस्तुतः परमात्मा की अभिव्यक्ति है। अर्थात् यह सब परमात्मस्वरूप ही है।

उन क्षर स्वरूप परमात्मा को परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४८१ -

ॐ अक्षराय नमः

अक्षर रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Imperishable.

कूटस्थः अक्षरः इति अर्थात् कूटस्थ अक्षर हैं। जिस प्रकार घडे का कारणभूत तत्त्व माटी है। घट में विकार हो अथवा नाश होने पर भी माटी का नाश नहीं होता है। वह उसकी कारणभूता अविकारी ही रहती है। उसी प्रकार यह क्षर जगत का कारण अक्षर परमात्मा ही हैं। इन नामरूपात्मक प्रपंच के उत्पत्त्यादि होने पर भी उनमें कोई विकार नहीं होता है, अतः वे अक्षर हैं।

उन अक्षर पुरुष परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४८२ -

ॐ अविज्ञात्रे नमः

अविज्ञाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Non-Knower.

आत्मनि कर्तृत्वादि विकल्पविज्ञानं कल्पितं इति तद्वासना अवगुण्ठितो जीवो विज्ञाता, तद्विलक्षणो विष्णुः अविज्ञाता। अर्थात् आत्मा में कर्तृत्वादि विकल्प विज्ञान कल्पित हैं, उसकी वासना से ढका हुआ जीव विज्ञाता है, और उससे विलक्षण विष्णु अविज्ञाता हैं। जीव इन्द्रिय तथा मन आदि उपाधि से तादात्म्य करता है, तब वह तत्-तत् विषयों का ज्ञाता बनता है। परमात्मा समस्त उपाधि से रहित एक अखण्ड सत्तामात्र हैं, अतः उनमें विषय और विषयी भेद ही नहीं होने से वे अविज्ञाता हैं। उन अविज्ञाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४८३ -

ॐ सहस्रांशवे नमः

सहस्त्र किरणोंवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is with Thousands Rays.

आदित्यादिगता अंशवो अस्य इति अयमेव मुख्यः अर्थात् सूर्य आदि की किरणें वास्तव में भगवान से ही हैं, इसलिए वे ही मुख्य सहस्रांशु हैं। यह सृष्टि परमात्मा की ही माया के द्वारा अभिव्यक्ति है। इसलिए जो कुछ भी वह परमात्मा ही है, उनसे अन्यत् कुछ भी नहीं है। अतः सूर्य आदि की जो असंख्य किरणें है, वह परमात्मा की ही है। अतः परमात्मा सहस्रांशु कहे जाते हैं।

उन सहस्र किरणोंवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४८४ -

ॐ विधात्रे नमः

धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All-Supporter.

विशेषेण शेषदिग्गजभूधरान् सर्वभूतानां धातृन् दधाति इति विधाता। अर्थात् समस्त भूतों को धारण करनेवाले शेष, दिग्गज और पर्वतों को विशेषरूप से धारण करते हैं, इसलिए विधाता हैं। पौराणिक कथा के अनुसार पृथ्वी को धारण करनेवाले शेषनाग, अनेकों दिग्गज आदि देवता होते हैं। किन्तु उन सब का अस्तित्व भगवान की वजह से है। अर्थात् वे ही सब को धारण करनेवाले होने से विधाता हैं।

उन सर्वधारक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४८५ -

ॐ विधात्रे नमः

धारण करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is All-Supporter.

विशेषेण शेषदिग्गजभूधरान् सर्वभूतानां धातृन् दधाति इति विधाता। अर्थात् समस्त भूतों को धारण करनेवाले शेष, दिग्गज और पर्वतों को विशेषरूप से धारण करते हैं, इसलिए विधाता हैं। पौराणिक कथा के अनुसार पृथ्वी को धारण करनेवाले शेषनाग, अनेकों दिग्गज आदि देवता होते हैं। किन्तु उन सब का अस्तित्व भगवान की वजह से है। अर्थात् वे ही सब को धारण करनेवाले होने से विधाता हैं।

उन सर्वधारक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४८६ -

ॐ गभस्तिनेमये नमः

ग्रहमण्डल के केन्द्ररूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Center of Cosmos

गभस्तिचक्रस्य मध्ये सूर्यात्मना स्थित इति गभस्तिनेमिः अर्थात् गभस्तियों के चक्र के बीच में सूर्यरूप से स्थित हैं, इसलिए गभस्तिनेमि हैं। गभस्ति अर्थात् सूर्यमण्डल। इनके मध्य में सूर्य होने की वजह से समस्त ग्रह–नक्षत्र आदि अपनी अपनी धूरी पर, अन्योन्य टकराएं बगैर भ्रमण करते हैं। परमात्मा ही इस सूर्य रूप महान विभूति की तरह अभिव्यक्त हैं, वे समस्त ग्रहमण्डल के केन्द्र में स्थित सूर्यरूपा हैं। उन गभस्ति के मध्य में स्थित परमात्मा को नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४८७ -

ॐ सत्त्वस्थाय नमः

अन्तःकरण में स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Abiding in Sattva.

सर्वप्राणिषु तिष्ठति इति वा सत्वस्थः अर्थात् समस्त प्राणियों में रहते हैं, इसलिए वे सत्वस्थ हैं। सत्वगुण ज्ञान और प्रकाश उत्पन्न करनेवाला होता है। अन्तःकरण सूक्ष्म पंचमहाभूत के सात्विक अंश से निर्मित होने की वजह से उसमें परमात्मा चेतनता की तरह अभिव्यक्त होते हैं। इस प्रकार सत्वगुण से बने अन्तःकरण में जीवरूप से स्थित होने की वजह से वे सत्वस्थ कहे जाते हैं। उन अन्तःकरण में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४८८ –

ॐ सिंहाय नमः

सिंह रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lion.

विक्रमशालित्वात् सिंहवत् सिंहः अर्थात् सिंह के समान पराक्रमी होने से सिंह हैं। सिंह अपने अन्दर तृप्त होता है, भूख लगने पर ही निर्भीकता से अपने बल और पराक्रम का प्रयोग करके शिकार करता है। वैसे ही भगवान अपने अन्दर संतुष्ट हैं, किन्तु जब सृष्टि में अधर्म हावि होता है, तो धर्म की स्थापना हेतु अवतार धारण करके नकारात्मक शक्तियों तथा अधर्मियों का बलपूर्वक संहार करते हैं। उन सिंह के समान पराक्रमी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४८९ –

ॐ भूतमहेश्वराय नमः

प्राणियों के महान शासक को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Lord of Beings.

भूतानां महान् ईश्वरः भूतेन सत्येन स एव परमो महानीश्वरः इति वा भूत–महेश्वरः अर्थात् भूतों के महान् ईश्वर हैं अथवा भूत–सत्यरूप से वे ही अति महान् ईश्वर हैं, इसलिए भूत महेश्वर हैं। भूत अर्थात् समस्त प्राणी जगत। परमात्मा सभी प्राणियों का सत्य हैं, तथा उनके अन्तःकरण में साक्षी रूप से स्थित रहकर वे ही सब के नियन्ता होते हैं, इसलिए वे भूतमहेश्वर कहलाते हैं।

उन समस्त प्राणियों के महान नियन्ता–शासक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४९० –

ॐ आदिदेवाय नमः

सबके आदि देव को नमस्कार।

I salute the one who is the Primal Deity.

सर्वभूतानि आदीयन्ते अनेन इति आदिः। आदिश्च असौ देवश्च इति आदिदेवः। अर्थात् सब भूतों को ग्रहण करते हैं, इसलिए आदि हैं, इस प्रकार वे आदि है, और देव भी हैं, इसलिए वे आदिदेव हैं। सृष्टि का प्रलय होने पर सम्पूर्ण जगत परमात्मा में ही विलीन हो जाता है। मानों परमात्मा उनका भक्षण कर जाते हैं, इसलिए वे आदि हैं, तथा समर्थ होने की वजह से देव हैं इस प्रकार परमात्मा आदिदेव हैं।

उन आदिदेव परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९१ -

ॐ महादेवाय नमः

महान देव रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Deity.

सर्वान् भावान् परित्यज्य आत्मज्ञानयोगैश्वर्ये महति महीयते, तस्मादुच्यते महादेवः अर्थात् समस्त भावों को छोड़कर अपने महान् ज्ञान, योग और ऐश्वर्य से महिमान्वित हैं, इसलिए महादेव कहलाते हैं। जगत में जो भी ज्ञान, योग और ऐश्वर्य है, उसका मूल स्रोत स्वयं परमात्मा ही हैं। स्वयं किसी भी उपाधि से युक्त नहीं हैं, किन्तु सभी उपाधियां उन्हीं की अभिव्यक्तियां है, अतः उनके ज्ञानी परमात्मा के होने से वे महान देव हैं।

उन महादेव को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९२ -

ॐ देवेशाय नमः

देवताओं के नियन्तारूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Lord of Gods.

प्राधान्येन देवानामीशः देवेशः अर्थात् देवताओं में प्रधान होने से देवों के ईश्वर; देवेश हैं। जगत के संचालन हेतु जो समर्थ शक्तियां है, वे सब देवता कहलाती हैं। परमात्मा उन सभी देवताओं के स्वामी, नियामक होने से वे देवेश कहे जाते हैं।

उन देवेश परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९३ -

ॐ देवभृद्गुरवे नमः

इन्द्र के शासक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Preceptor of Indra.

देवान् बिभर्ति इति देवभृत् शक्रः, तस्यादि शासिता इति देवभृद्गुरुः अर्थात् देवताओं का पालन करने के कारण इन्द्र देवभृत् हैं, उनके भी शासक होने से भगवान् देवभृद्गुरु हैं। इन्द्रदेवता अन्य सभी देवताओं के राजा होने से उन सबके शासक और पालक हैं। देवताओं के राजा इन्द्र परमात्मा के ही अधीन होकर अन्य देवताओं के शासक होते है; अतः परमात्मा देवभृद्गुरु हैं। उन देवों के राजा इन्द्र के भी शासक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९४ -

ॐ उत्तराय नमः

संसार से उत्तीर्ण परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who transcends limitations

जन्मसंसारबन्धनाद् उत्तरति इति उत्तरः अर्थात् जन्मरूप संसारबन्धन से उत्तीर्ण अर्थात् मुक्त हैं, इसलिए उत्तर हैं। कर्ता-भोक्ता जीव जो अपने आपको काल से संकुचित मानता है, वही जन्म-मृत्यु आदि रूप संसार के बन्धन में होता है। परमात्मा काल से परे होने से जन्मादिरूप संसार से भी परे अर्थात् उत्तीर्ण हैं। अतः वे उत्तर कहे जाते हैं। उन संसार से परे परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९५ -

ॐ गोपतये नमः

गोपवेषधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Cows.

गवां पालनाद् गोपवेषधरो गोपतिः गौओं का पालन करने से गोपवेषधारी कृष्ण गोपति हैं। धर्म की रक्षा हेतु परमात्मा स्वयं ही भगवान श्रीकृष्ण के रूप में अवतिरित हुए थे। गोकुल में ग्वाले के वेष में स्थित रहकर गायें चराते थे तथा गायों का पालन करते थे, अतः वे गोपति कहलाएं।

उन गोपवेषधारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९६ -

ॐ गोप्त्रे नमः

सब के रक्षक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Protector.

समस्तभूतानि पालयन् रक्षको जगतः इति गोप्ता अर्थात् समस्त भूतों का पालन करनेवाले भगवान् जगत के रक्षक हैं, इसलिए गोप्ता हैं। परमात्मा समस्त जीवों को जीवन प्रदान करते हैं, उसे कर्म करने का सामर्थ्य व स्वतंत्रता देकर, उनके कर्मों का फल प्रदान करने के द्वारा तथा उसे भोगने हेतु समर्थ बनाने के द्वारा उनकी रक्षा करते हैं। इस प्रकार वे समस्त भूतों का पालन करते हैं। इसलिए वे सबके रक्षक हैं।

उन सब भूतों के रक्षक परमात्मा को नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
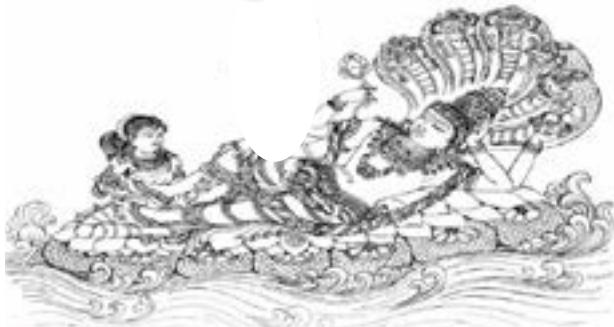
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९७ -

ॐ ज्ञानगम्याय नमः

ज्ञानगम्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is accessible by Knowledge.

न कर्मणा, न ज्ञानकर्मभ्यां वा गम्यते, किन्तु ज्ञानेन गम्यते इति ज्ञानगम्यः अर्थात् कर्म से अथवा ज्ञान और कर्म के समुच्चय से नहीं जाने जाते, किन्तु केवल ज्ञान से ही जाने जाते हैं, इसलिए ज्ञानगम्य हैं। परमात्मा सब के हृदय में उसकी आत्मा की तरह से स्थित हैं। किन्तु अज्ञानवशात् उन्हें कोई भी नहीं जानता हैं। वेदान्त वह प्रमाण है जिससे उन्हें अपनी आत्मा की तरह से साक्षात् जान लिया जाता है, अतः परमात्मा को ज्ञानगम्य कहा जाता हैं। उन ज्ञानगम्य परमेश्वर को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम
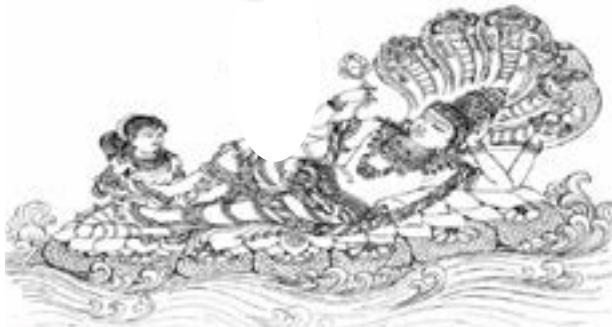
भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ४९८ –

ॐ पुरातनाय नमः

पुरातन परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Ancient.

कालेन अपरिच्छिन्नत्वात् पुरा अपि भवति इति पुरातनः अर्थात् काल से अपरिच्छिन्न होने के कारण सब से पहले भी रहते हैं, इसलिए पुरातन हैं। परमात्मा काल से परे हैं। जिस समय काल का अस्तित्व नहीं था, उस समय भी परमात्मा थे। काल की उत्पत्ति भी परमात्मा से ही हुई है। अतः वे पहले से ही होने से पुरातन हैं।

उन काल से परे पुरातन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ४९९ -

ॐ शरीरभूतभृते नमः

प्राणरूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Nourisher of the elements in the Body.

शरीरारम्भकभूतानां भरणात् प्राणरूपधरः शरीरभूतभृत् अर्थात् शरीर के कारणरूप भूतों का प्राणरूप से पालन करते हैं, इसलिए शरीरभूतभृत् हैं। जीवों के शरीर आकाशादि पंचमहाभूत के बने हुए है। उसमें स्थित प्राण इस जड़ शरीर को जीवन्त बनाए रखकर उसे धारण करता है। शरीर से प्राण निकल जाने पर यह शरीर मृत हो जाता है। इस प्राणरूप से परमात्मा ही शरीर को जीवन्त बनाए रखकर उसे धारण करते हैं। अतः उन्हें शरीरभूतभृत् कहा। उन प्राणरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५०० –

ॐ भोक्त्रे नमः

पालनकर्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Protector.

भुनक्ति इति पालकत्वाद् भोक्ता अर्थात् पालन करनेवाले होने से भोक्ता हैं। यह शरीर तथा समस्त जगत माया के कार्यरूप पंचमहाभूत का बना हुआ जड़ है। इसकी स्वतंत्र न तो कोई सत्ता है, और न ही उसमें चेतना है। परमात्मा इस माया निर्मित उपाधि तथा जगत को सत्ता प्रदान करके उसका अस्तित्व बनाए रखते हैं तथा चेतना प्रदान करने के द्वारा उसे जीवन्त करते हैं। इस प्रकार वे ही सत्ता–स्फुर्ति प्रदान करने के द्वारा सब का पालन करते हैं। उन सब का पालन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।